Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **An Open Economy is one which interacts with other Countries through various channels. So far we had not considered this aspect and just limited to a closed economy in which there are no linkages with the rest of the world in order to simplify our analysis and explain the basic macroeconomic mechanisms. In reality, most modern economies are open. There are three ways in which these linkages are established**

खुली अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो विभिन्न माध्यमों द्वारा अन्य देशों से अंर्तव्यवहार करती है। अब तक हमने इस पहलू पर विचार नहीं किया था और बंद अर्थव्यवस्था तक सीमित रेखा जिसमें शेष विश्व से कोई जुड़ाव हीं होते ताकि हमारा विश्लेषण सरल रहे और समष्टि अर्थशास्त्र के आधार तंत्र की व्याख्या सरल हो। वास्तव में, अधिकांश अर्थव्यवस्थाएँ खुली हैं। इन जुड़ावों को स्थापित करने के तीन तरीके हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **1. Output Market : An Economy can trade in goods and services with other countries. This widens choice in the sense that consumers and producers can choose between domestic and foreign goods.**

1. निर्गत बाजार – एक अर्थव्यवस्था अन्य देशों से वस्तुओं और सेवाओं में व्यापार कर सकती है। इससे चयन विस्तृत होता है, इस अर्थ में कि उपभोक्ता और उत्पादक घरेलू और विदेशी वस्तुओं के बीच चयन कर सकते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **2. Financial Market :**
  Most Often an economy can buy financial assets from other countries. This gives investors the opportunity to choose between domestic and foreign assets.

2. वित्तीय बाजार – अधिक बार, एक अर्थव्यवस्था, दूसरे देशों से वित्तीय परिसंपत्तियाँ खरीदती है। इससे विनियोजकों को घरेलू तक विदेशी परिसंपत्तियाँ से चयन की अवसर मिलता है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **3. Labour Market : Firms can Choose where to locate production and workers to choose where to work. There are various immigration laws which restrict the movement of labour between countries.**

3. श्रम बाजार – फर्म यह चयन कर सकती हैं कि उत्पादन को कहाँ किया जाए और श्रमिक चयन कर सकते हैं कि कहाँ काम किया जाय। अनेकों अप्रवासन कानून, श्रमिकों की देशों के मध्य आवागमन को प्रतिबंधित करते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **Movement of goods has traditionally been seen as a substitute for the movement of labour. We focus on the first two linkages. Thus, an open economy is said to be one that trades with other nations in goods and services and most often, also in financial assets. Indians for instance, can consume products which are produced around the world and some of the products from India are exported to other countries.**

पारंपरिक रूप से, वस्तुओं के अवागमन को, श्रम आवागमन के स्थापना की भाँति देखा गया है। हम, पहले दो जुड़ावों पर विचार करते है। इस प्रकार, खुली अर्थव्यवस्था वह है जो अन्य देशों के साथ वस्तुओं और सेवाओं में व्यापर करती है और बहुधा, वित्तीय परिसंपत्तियों में भी। उदाहरणार्थ, भारतीय चारों ओर विश्व में उत्पादित वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं और भारत से कुछ वस्तुओं का अन्य देशों को निर्यात किया जाता है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **Foreign trade, therefore, influences Indian aggregate demand in two ways. First, when Indians buy foreign goods, this spending escapes as a leakage from the circular flow of income decreasing aggregate demand. Second, our exports to foreigners enter as an injection into the circular flow, increasing aggregate demand for goods produced within the domestic economy.**

इस प्रकार, विदेशी व्यापार, भारत की समस्त माँग को दो प्रकार से प्रभावित करता है। प्रथम, जब भारतीय विदेशी वस्तुओं को खरीदते हैं तो उनके द्वारा किया गया व्यय समस्त माँग को कम करते हुए, आय के वर्तुल प्रवाह से रिसाव के रूप में निष्कासित होता है। द्वितीय, विदेशों को जो हम निर्यात करते हैं वह घरेलू उत्पादित वस्तुओं के लिये समस्त माँग में वृद्धि करते हुए वर्तुल प्रवाह में अंत क्षेपण के रूप में प्रवेश करता है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **When goods move across national borders, money must be used for the transactions. At the international level there is no single currency that is issued by a single bank. the currency will maintain a stable purchasing power. Without this confidence, a currency will not be used as an international medium of exchange and unit of account since there is no international authority with the power to force the use of a particular currency in international transactions.**

जब राष्ट्रीय सीमाओं के बीच वस्तुओं का आवागमन होता है, सौदों के लिये द्रव्य का उपयोग किया जाता है। अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर ऐसी कोई एक करेंसी नहीं है जो किसी एक बैंक द्वारा निर्गमित की जाती हो। करेंसी की क्रय शाक्ति स्थिर रहेगी। इस विश्वास के बगैर, किसी करेंसी को अंतर्राष्ट्रीय विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग नहीं किया जायेगा और न ही लेखा की इकाई के रूप में उपयोग होगा क्योंकि एसा कोई अंतराष्ट्रीय प्रधिकरण नही है जिसके पास यह शक्ति हो कि वह अंतर्राष्ट्रीय लेन देन में किसी करेंसी के उपयोग को लागू कर सके।

- **There are two aspects of this commitment that has affected its credibility — the ability to convert freely in unlimited amounts and the price at which this conversion takes place. The international monetary system has been set up to handle these issues and ensure stability in international transactions.**

यह दूसरी परिसंपत्ति बहुधा सोना या अन्य राष्ट्रीय मुद्राएँ थी। इस वचनबद्धता के दो पहलू हैं जिसने इसकी विश्वसनीयता को प्रभावित किया है– असीमित मात्रा में निर्बाध रूप में परिवर्तन की समता और कीमत, जिस पर परिवर्तन होता है। इन्हीं मुद्रों का निराकरण करने तथा अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन में स्थिरता लाने के लिये, अंतराष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली की स्थापना की गई।

- **With the increase in the volume of transactions, gold ceased to be the asset into which national currencies could be converted (See Box 6.2) . Although some national currencies have international acceptability, what is important in transactions between two countries is the currency in which the trade occurs. For instance, if an Indian wants to buy a good made in America, she would need dollars to complete the transaction.**

लेनदेनों के मात्रा में वृद्धि के साथ, स्वर्ण वह परिसंपति नहीं रहा जिसमें राष्ट्रीय करेंसियों को परिवर्तित किया जा सके। (बॉक्स 6.2 को देखें)। यद्यपि कुछ राष्ट्रीय करेंसियों की अंतर्राष्ट्रीय मान्यता है, दो देशों के बीच लेन देन में, वह करेंसी महत्वपूर्ण होती है जिसमें व्यापार किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई भारतीय अमेरिका में निर्मित वस्तु खरीदना चाहता है तो लेनदेन को पूरा करने के लिए उसे डॉलरों की आवश्यकता होगी।

- **If the price of the good is ten dollars, she would need to know how much it would cost her in Indian rupees. That is, she will need to know the price of dollar in terms of rupees. The price of one currency in terms of another currency is known as the foreign exchange rate or simply the exchange rate.**

यदि वस्तु की कीमत 10 डॉलर है तो उसे यह जानना जरूरी होगा कि भारतीय रूपयों में इसकी लागत क्या होगी। एक देश की मुद्रा की किसी अन्य देश की मुद्रा के रूप में कीमत को विदेशी विनिमय दर अथवा सरल रूप में विनिमय दर कहते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **The Balance Of Payments**
- **The balance of payments (BOP) record the transactions in goods, services and assets between residents of a country with the rest of the world for a specified time period typically a year.**

There are two main accounts in the BOP — the current account and the capital account1 .

अदायगी–संतुलन

अदायगी संतुलन **(BOP)** किसी एक देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच, एक निश्चित समयावधि में, खासकर 2 वर्ष में, वस्तुओं, सेवाओं और परिसंपत्तियों के लेनदेन का विवरण है। अदायगी संतुलन के दो मुख्य खाते होते हैं– चालू खाता और पूँजी खाता1 ।

- **Current Account**
- **Current Account is the record of trade in goods and services and transfer payments. Figure 6.1 illustrates the components of Current Account. Trade in goods includes exports and imports of goods. Trade in services includes factor income and non-factor income transactions. Transfer payments are the receipts which the residents of a country get for 'free', without having to provide any goods or services in return. They consist of gifts, remittances and grants.**

चालू खाता

चालू खाता वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार में अंतरण अदायगियों का विवरण है। चित्र 6.1, चालू खाते के घटकों की प्रदर्शित करता है। वस्तुओं के व्यापार में, वस्तुओं के निर्यातों तथा आयातों को शामिल किया जाता है। सेवाओं के व्यापार में उपदान आय तथा गैर उपदान आय लेनदेन को शामिल किया जाता है। अंतरण भुगतान, ऐसी प्रभत्तियाँ हैं जो किसी देश के निकासियों को निशुल्क प्रभाव होती है और बदले में कोई वस्तुऐं अथवा सवबीएँ नहीं देनी पड़ती।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

- **Buying foreign goods is expenditure from our country and it becomes the income of that foreign country. Hence, the purchase of foreign goods or imports decreases the domestic demand for goods and services in our country. Similarly, selling of foreign goods or exports brings income to our country and adds to the aggregate domestic demand for goods and services in our country.**

विदेशों से वस्तुएँ खरीदना, हमारे देश का व्यय है तथा यह विदेश की आय है। इसलिए, विदेशी वस्तुओं की खरीद अथवा आयात है, हमारे देश में घरेलू वस्तुओं और सेवाओं की माँग को कम कर देते हैं। इसी प्रकार, विदशों को माल बेचने अथवा निर्यातों से हमारे देश को आय प्राप्त होती है जो हमारे देश में वस्तुओं और सेवाओं की कुल घरेलू माँग में वृद्धि करते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Components Of Current Account

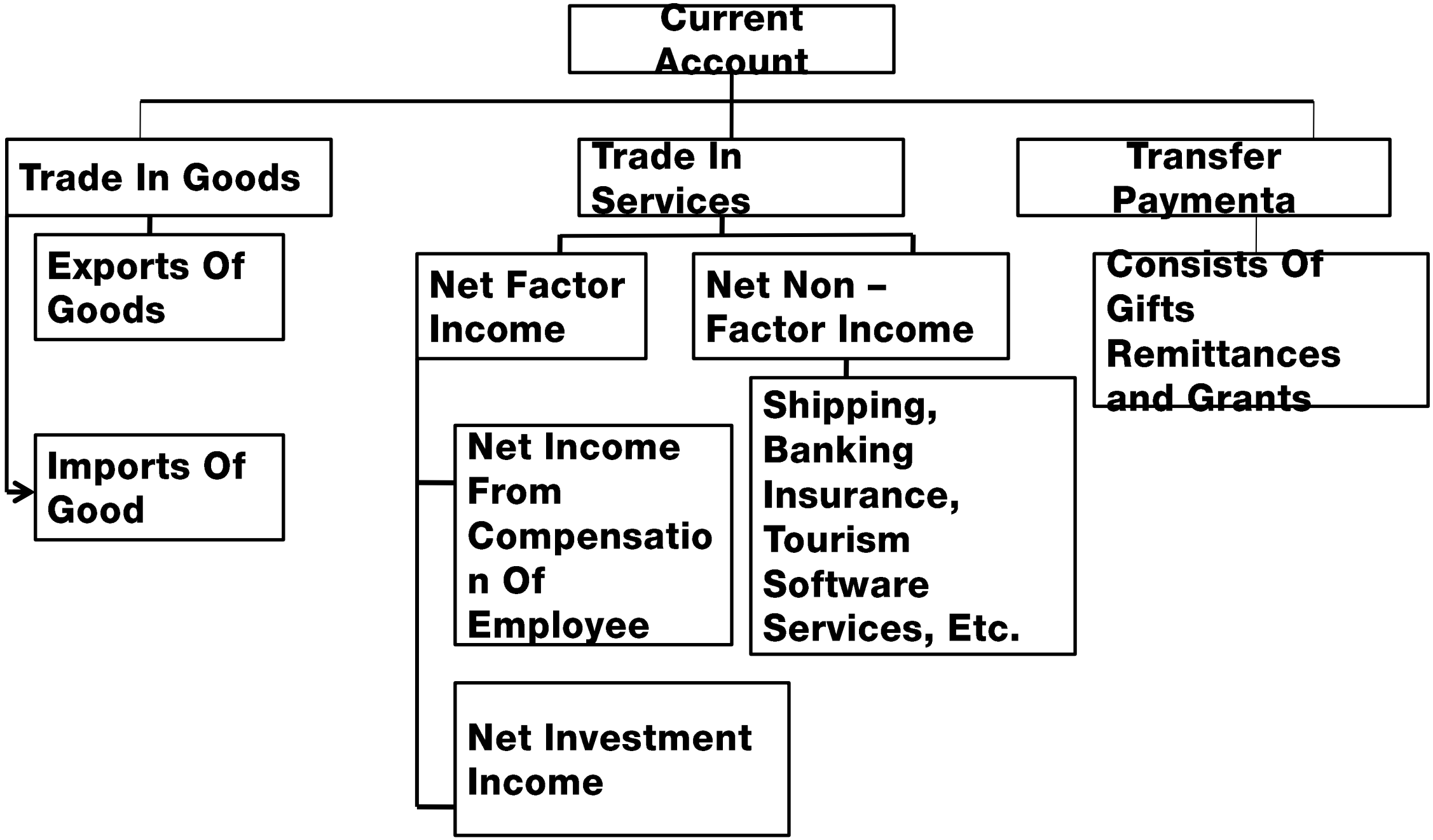

Balance On Current Account

Current Account is in balance when receipts on current account are equal to the payments on the current account. A surplus current account means that the nation is a lender to other countries and a deficit current account means that the nation is a borrower from other countries.

चालू खाते में संतुलन

चालू खाता संतुलन में होता है जब, चालू खाते में प्राप्तियाँ चालू खाते के भुगतानों के बराबर होती हैं। चालू खाते के आधिक्य का अर्थ है कि एक देश को अन्य देशों लेना है और चालू खाते के घाटे का अर्थ है कि देश अन्य देशों की ऋणी है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Current Account Surplus	Balanced Current Account	Current Account Deficit
Receipts > Payments	Receipts = Payments	Receipts < Payments

Balance on Current Account has two components:

- **Balance of Trade or Trade Balance**
- **·Balance on Invisibles**

चालू खाते के संतुलन के दो धरक होते हैं

- व्यापार का संतुलन के दो धरक होते हैं
- अदृश्य मदों का संतुलन

Balance of Trade (BOT)

Is the difference between the value of exports and value of imports of goods of a country in a given period of time. Export of goods is entered as a credit item in BOT, whereas import of goods is entered as a debit item in BOT. It is also known as Trade Balance.

व्यापार संतुलन (BOT)

किसी देश के एक निश्चित समयवधि में, निर्यातों और आयातों के मूल्यों की अंतर है। वस्तुओं के निर्यात को (BOT) में क्रेडिट किया जाता है तथा आयात को (BOT) में डेबिट किया जाता है। इसका व्यापार संतुलन भी कहते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

BOT is said to be in balance when exports of goods are equal to the imports of goods. Surplus BOT or Trade surplus will arise if country exports more goods than what it imports. Whereas, Deficit BOT or Trade deficit will arise if a country imports more goods than what it exports. Net Invisibles is the difference between the value of exports and value of imports of invisibles of a country in a given period of time.

BOT को संतुलित कहा जाता है जब वस्तुओं के निर्यात, वस्तुओं के आयात के बराबर होते हैं। **BOT** में अधिक्य अथवा व्यापार अधिक्य तभी होता है जब कोई देश आयातों की अपेक्षा, वस्तुओं का निर्यात अधिक करता है। घाटे की **BOT** तब होगा। जब कोई देश निर्यातों की अपेक्षा, वस्तुओं का अधिक आयात करता है। निवल अदृश्य मदें एक देश के एक निश्चित अवधि में अदृश्य मदों के निर्यातों एवं आयातों के मूल्यों का अंतर होती हैं।

Invisibles include services, transfers and flows of income that take place between different countries. Services trade includes both factor and non-factor income. Factor income includes net international earnings on factors of production (like labour, land and capital). Non-factor income is net sale of service products like shipping, banking, tourism, software services, etc.

अदृश्य मदों में विभिन्न देशों के बीच होने वाली, सेवाओं, हस्तांतरणों तथा आम प्रवाह शामिल होते हैं। सेवाओं के व्यापार में, उपदान तथा गैर–उपदान आय दोनों शामिल किया जाता है। उपदान आय में उत्पादन के साधनों जैसे व्यय, भूमि तथा पूँजी) से प्राप्त निवल अंतर्राष्ट्रीय आयों को शामिल किया जाता है। सेवा–उत्पादों जैसे जहाजरानी, बैंकिंग, पयर्टन, सॉफ्टवेयर सेवाएँ आदि से प्राप्त निवल बिक्री को गैर–उपदान आय कहते हैं।

Capital Account

Capital Account records all international transactions of assets. An asset is any one of the forms in which wealth can be held, for example: money, stocks, bonds, Government debt, etc. Purchase of assets is a debit item on the capital account. If an Indian buys a UK Car Company, it enters capital account transactions as a debit item (as foreign exchange is flowing out of India).

पूँजी खाता

पूँजी खाता, परिसंपत्तियों के समस्त अंतर्राष्ट्रीय लेनदेनों को दर्ज करता है। परिसम्पत्ति धन को रखने का कोई भी रूप होता है। जैसे, मुद्रा, स्टॉक, बंधपत्र, सरकारी ऋण आदि। परिसम्पत्तियों की खरीद पँजी-खाते में डेबिट की जाती है। यदि कोई भारतीय एक यू. के. कार कंपनी को खरीदता है तो वह इस पूंजी खाते के लेनदेन का, डेबिट मद में प्रविष्टी कर देता है (क्योंकि विदेशी विनिमय का भारत से बाह्य प्रवाह हो रहा है)।

On the other hand, sale of assets like sale of share of an Indian company to a Chinese customer is a credit item on the capital account. Fig. 6.2 classifies the items which are a part of capital account transactions. These items are Foreign Direct Investments (FDIs), Foreign Institutional Investments (FIIs), external borrowings and assistance.

दूसरा ओर, परिसंपत्ति का बिक्री जैसे, यू. के. से खरीदी गई, एक भारतीय कंपनी के शेयर की बिक्री एक चीनी व्यापारी को बिक्री करना पूंजी खाते की क्रेडिट मद है। चित्र 6.2 उन मदों का वर्गीकरण करता है जो चालू खाते के लेनदेनों का भाग है। यह मदें प्रत्यक्ष विदेशी विनियोग (**FIIs**) विदेशी संस्थागत विनयोग (**FIIs**) विदेशी ऋण तथा सहायता हैं।

Components Of Capital Account

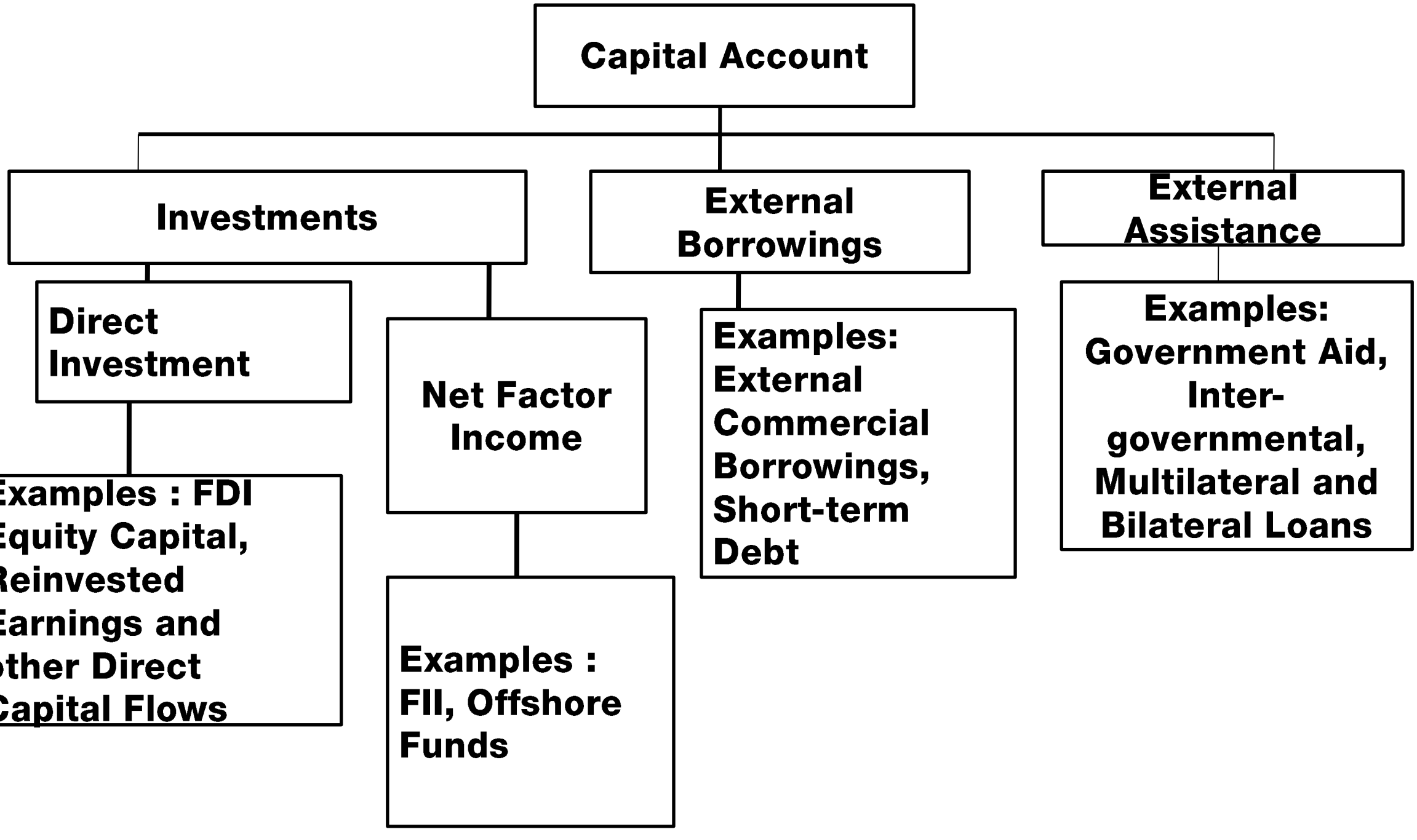

Balance on Capital Account

Capital account is in balance when capital inflows (like receipt of loans from abroad, sale of assets or shares in foreign companies) are equal to capital outflows (like repayment of loans, purchase of assets or shares in foreign countries). Surplus in capital account arises when capital inflows are greater than capital outflows, whereas deficit in capital account arises when capital inflows are lesser than capital outflows.

पूँजी खाता संतुलन

पूँजीखाता संतुलन में होता है जब पूँजी अंर्तप्रवाह (जैसे विदेशों से ऋण प्राप्ति, विदेशी कंपनियों में शेयरों की बिक्री) पूँजी बाह्य प्रवाहों (जैसे ऋणों की भुगतान, विदेशों में कम्पनियों के शेयरों या परिसंपत्तियों का खरीदना) के बराबर होते हैं। पूँजी खाते में आधिक्य तब होता है जब पूँजी अंर्तप्रवाह, पूँजी खाते में घाटा तब होता है जब पूँजी अंर्तवाह, पूँजी बाह्य प्रवाहों से कम होते हैं।

Balance of Payments Surplus and Deficit

The essence of international payments is that just like an individual who spends more than her income must finance the difference by selling assets or by borrowing, a country that has a deficit in its current account (spending more than it receives from sales to the rest of the world) must finance it by selling assets or by borrowing abroad. Thus, any current account deficit must be financed by a capital account surplus, that is, a net capital inflow.

अदायगी–संतुलन और घाटा

अंतर्राष्ट्रीय अदायगी का सार है कि जिस प्रकार अपनी आय से अधिक व्यय करने वाले को, परिसम्पत्तियाँ बेचकर अथवा उधार लेकर, आय व्यय के अंतर को पूरा करना पड़ता है, उसी प्रकार कोई देश जिसके चालू खाते में घाटा है (जो शेष विश्व को बिक्री से प्राप्त धन से अधिक धन व्यय करता है। उसे अपनी परिसम्पत्तियों को बेचकर या विदेशों से ऋण लेकर उस कमी को पूरा करना होता है। इस प्रकार, किसी भी चालू खाता घाटे को निवल पूँजी खाता अधिक्य अर्थात् निवल पूँजी प्रवाह से वित्तपोषित करना होता है।

Current account + Capital account 0

The country could use its reserves of foreign exchange in order to balance any deficit in its balance of payments. The reserve bank sells foreign exchange when there is a deficit. This is called official reserve sale. The decrease (increase) in official reserves is called the overall balance of payments deficit (Surplus).

वैकल्पिक रूप में, एक देश अपने घाटे को संतुलित करने के लिये, अपने विदेशी विनिमय कोषों का उपयोग कर सकता है। जब घाटा होता है तो रिजर्व बैंक विदेशी विनिमय बेचता है। इसे अधिकारिक कोष विक्रय कहा जाता है। अधिकारिक कोषों में कमी (वृद्धि) का कुल अदायगी–संतुलन घाटा (अधिक्म) कहते हैं।

Autonomous and Accommodating Transactions

International economic transactions are called autonomous when transactions are made due to some reason other than to bridge the gap in the balance of payments, that is, when they are independent of the state of BOP. One reason could be to earn profit. These items are called 'above the line' items in the BOP .

स्वायत्त और समायोजित लेनदेन

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक लेनदेनों को स्वायत कहा जाता है जब लेनदेन, अदायगी संतुलन में विषमता को पूरा करने के अलावा, किसी और कारणवश किये जाते हैं, अर्थात जब वे **BOP** की दशा से स्वतंत्र होते हैं। एक कारण लाभ कमाना हो सकता है। इन मदों को अदायगी संतुलन में 'रोक के ऊपर की मदें' कहते है।

Accommodating transactions

(Termed 'below the line' items), on the other hand, are determined by the gap in the balance of payments, that is, whether there is a deficit or surplus in the balance of payments. In other words, they are determined by the net consequences of the autonomous transactions.

समायोजित लेनदेनों

(रेखाओं के नीचे की मदों) का निर्धारण अदायगी-संतुलन की विषमता द्वारा होता है अर्थात जब अदायगी-संतुलन में घाटा हो अथवा अधिक्य हो। अन्य शब्दों में ये स्वायत्त लेनदेनों के निवल परिणामों द्वारा निर्धारित होते हैं।

Errors and Omissions

It is difficult to record all international transactions accurately. Thus, we have a third element of BOP (apart from the current and capital accounts) called errors and omissions which reflects this. Table 6.1 provides a sample of Balance of Payments for India. Note in this table, there is a trade deficit and current account deficit but a capital account surplus. As a result, BOP is in balance.

त्रुटि और लोप:

सभी अंतर्राष्ट्रीय लेनदेनों को सही प्रकार से रिकार्ड करना कठिन है। अत: हमारे पास **BOP** का एक तीसरा अवयव (चालू और पूंजी खातों के अतिरिंक्त) जिसे त्रुटि और लोप का प्रतिबिंबित मानते हैं। तालिका 6.1 भारत के अदायगी-संतुलन का एक नमूना प्रस्तुत करती है। ध्यान दीजिये, इस तालिका में व्यापार घाटा है, चालू खाते का घाटा है लेकिन पूंजी खाते का अधिक्य है। फलस्वरूप **BOP** संतुलन में है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

BOP Deficit	Balanced BOP	BOP Surplus
Overall Balance < 0	Overall Balance = 0	Overall Balance > 0
Reserve Change > 0	Reserve Change = 0	Reserve Change < 0

The balance of payments accounts presented above divide the transactions into two accounts, current account and capital account. However, following the new accounting standards introduced by the International Monetary Fund in the sixth edition of the Balance of Payments and International Investment Position Manual (BPM6) the Reserve Bank of India also made changes in the structure of balance of payments accounts. According to the new classification, the transactions are divided into three accounts: current account, financial account and capital account.

यहां दिखाया गया अदायगी संतुलन लेखा, लेनदेनों को दो खातों में बांटता है–चालू खाता तथा पूंजी खाता। वैसे अंर्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा **Balance of Payments and International Investment Position Manual** के छठे संस्करण में नये लेखीय मानदंड लागू किये जाने के पश्चात भारतीय रिजर्व बैंक ने भी, अदायगी–संतुलन की संरचना में परिवर्तन किये हैं। नये वर्गीकरण के अनुसार, लेनदेनों को तीन खातों में बांटा गया है– चालू खाता, वित्तीय खाता तथा पूंजी खाता।

The most important change is that almost all the transactions arising on account of trade in financial assets such as bonds and equity shares are now placed in the financial account. However, RBI continues to publish the balance of payments accounts as per the old system also, therefore the details of the new system are not being given here. The details are given in the Balance of Payments Manual for India published by the Reserve Bank of India in September 2010.

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि वित्तीय परिसम्पत्तियों जैसे बांड और इक्विटी शेयरों में व्यापार के कारण, हाने वाले सभी लेनदेनों का अब वित्तीय खाते में रख दिया गया है। लेकिन भारतीय रिजर्व बैंक अभी भी पुरानी प्रणाली के अनुसार ही अदायगी–संतुलन खातों को प्रकाशित कर रहा है। अत: यहां पर नई प्रणाली के विवरणों को नहीं दिया जा रहा। यह विवरण भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सितम्बर 2010 में प्रकाशित **Balance of Payments Manual** में उपलब्ध है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Balance Of Payments For India (In Million USD)

No .	Item
1.	**Exports (of goods only)** निर्यात (केवल वस्तुओं का)
2.	**Imports (of goods only)** आयात (केवल वस्तुओं का)
3.	**Trade Balance (2-1)** व्यापार संतुलन (2–1)
4.	**(Net) Invisibles (4a+4b+4c)** (निवल) अदृश्य मदें 52 **4a+4b+4c)** **a. Non-factor Services** गैर–उपदान सेवाए **b. Income** आय **c. Transfers** हस्तांतरण
5.	**Current Account Balance (3+ 4)** चालू खाते का शेष **(3+ 4)**
6.	**Capital Account Balance** चालू खाते का शेष **(6a + 6b + 6c + 6d + 6e + 6f) 6a + 6b + 6c + 6d + 6e + 6f)** **a. External Assistance (net)** बाह्य सहायता (निवल) **b. External Commercial Borrowings (net)** बाह्य व्यापारिक ऋण

Balance Of Payments For India (In Million USD)

	c. Short-term Debt अल्पकालीन ऋण **d. Banking Capital (net) of which** बैंकिंग पूंजी (निवल) जिसमें 15 गैर निवासी जमाए **Non-resident Deposits (net)** **e. Foreign Investments (net) of which (6eA + 6eB)** विदेशी निवेश (निवल) जिसमे **6eA + 6eB)**
	A. FDI (net) प्रत्येक विदेशी निवेश (निवल)
	B. Portfolio (net) पोर्ट फोलियो (निवल) **F. Other Flows (net)** अन्य प्रवाह (निवल)
7.	**Errors and Omissions** त्रुटि एवं लोप
8.	**Overall Balance (5 + 6 + 7)** कुल संतुलन
9.	**Reserves Change** आरक्षियों में परिवर्तन

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

The Foreign Exchange Market

So far, we have considered the accounting of international transactions on the whole, we will now take up a single transaction. Let us assume that a single Indian resident wants to visit London on a vacation (an import of tourist services). She will have to pay in pounds for her stay there. She will need to know where to obtain the pounds and at what price. As mentioned at the beginning of this chapter, this price is known as the exchange rate.

विदेशी विनिमय बाजार

अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन के लेखांकन पर समस्त रूप में विचार करने के पश्चात् अब हम किसी एकल लेनदेन की चर्चा करते हैं। कल्पना कीजिए कि एक भारतीय निवासी छुट्टी बिताने के लिये लंदन की यात्रा (पर्यटन सेवा का आयात) पर जाना चाहता है। लंदन में ठहरने के लिये उसे पौंड में भुगतान करना होगा। उसे यह जानने की आवश्यकता होगी कि पौंड कहा¡ से और किस कीमत पर प्राप्त किये जा सकते हैं। जैसा कि पहले जिक्र किया जा चुका है, इस कीमत को 'विनिमय दर' कहते है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

The market in which national currencies are traded for one another is known as the foreign exchange market. The major participants in the foreign exchange market are commercial banks, foreign exchange brokers and other authorised dealers and monetary authorities.

वह बाजार जिसमें राष्ट्रीय मुद्राओं का एक-दूसरे से व्यापार होता है, उसे विदेशी विनिमय बाजार कहते हैं। इस बाजार के मुख्य प्रतिभागी व्यावसायिक बैंक, विदेशी विनिमय दलाल एवं अन्य अधिकाशत डीलर और मुद्रा प्राधिकारी होते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Foreign Exchange Rate

Foreign Exchange Rate (also called Forex Rate) is the price of one currency in terms of another. It links the currencies of different countries and enables comparison of international costs and prices. For example, if we have to pay Rs 50 for $1 then the exchange rate is Rs 50 per dollar.

विदेशी विनिमय दर

विदेशी विनिमय दर (जिसे फोटेक्स दर भी कहते हैं) एक मुद्रा की दूसरी मुद्रा में कीमत है। यह विभिन्न देशों की मुद्राओं के बीच कड़ी है और अंतर्राष्ट्रीय लागतों और कीमतों की तुलना करने में सहायक है। उदाहरण के लिए यदि हमें एक डॉलर के लिये रुपये 50 देने पड़ते हैं तो विनिमय की दर रुपये 50 प्रति डॉलर होगी।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Demand for Foreign Exchange **People demand foreign exchange because: they want to purchase goods and services from other countries; they want to send gifts abroad; and, they want to purchase financial assets of a certain country.**

विदेशी विनिमय की माँग

लोग विदेशी मुद्रा की माँग करते हैं क्योंकि वे अन्य देशों से वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदना चाहते हैं, वे विदेशों को उपहार भेजना चाहते हैं और वे किसी देश की वित्तीय परिसंपत्तियों को खरीदना चाहते हैं।

A rise in price of foreign exchange will increase the cost (in terms of rupees) of purchasing a foreign good. This reduces demand for imports and hence demand for foreign exchange also decreases,

विनिमय दर में वृद्धि करेगी (रुपयों के रूप में) इससे आयातों की माँग में कमी होती है और फलस्वरूप विदेशी विनिमय की माँग भी कम हो जायेगी यदि अन्य बातें समान रहें।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Supply of Foreign Exchange

Foreign currency flows into the home country due to the following reasons: exports by a country lead to the purchase of its domestic goods and services by the foreigners; foreigners send gifts or make transfers; and, the assets of a home country are bought by the foreigners.

विदेशी विनिमय की पूर्ति

किसी स्वदेश में, विदेशी मुद्रा का प्रवाह निम्न कारणोंवश होता है– एक देश के निर्यातों से, विदेशियों द्वारा घरेलू वस्तुओं और सेवाओं की खरीद में वृद्धि करते हैं; विदेशी उपहार भेजते हैं तथा विदेशियों द्वारा स्वदेश की परिसंपत्तियाँ खरीदी जाती हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Determination of the Exchange Rate

Different countries have different methods of determining their currency's exchange rate. It can be determined through Flexible Exchange Rate, Fixed Exchange Rate or Managed Floating Exchange Rate.

विनिमय दर का निर्धारण

अलग–अलग देशों की, अपनी मुद्रा विनिमय दर का निर्धारण करने की अलग अलग प्रणालियां हैं। इसको तिरती विनिमय दर स्थिर विनिमय दर अथवा प्रबंधित तिरती विनिमय दर के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

Flexible Exchange Rate

This exchange rate is determined by the market forces of demand and supply. It is also known as Floating Exchange Rate. As depicted in Fig. 6.1, the exchange rate is determined where the demand curve intersects with the supply curve, i.e., at point e on the Y – axis. Point q on the x – axis determines the quantity of US Dollars that have been demanded and supplied on e exchange rate. In a completely flexible system, the Central banks do not intervene in the foreign exchange market.

तिरती विनिमय दर

यह विनिमय दर, बाजार माँग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है। इसे तिरती विनिमय दर भी कहते हैं। जैसा कि चित्र 6.1 में दिखाया गया है। विनिमय दर वहां निर्धारित होती है जहां माँग वक्र, पूर्ति वक्र को काटती है अर्थात् **y** अक्षक **e** बिंदु पर। **x** अक्ष पर **q** यू.एस. डॉलरों की विनिमय दर पर माँगी जाने वाली माँग और पूर्ति को दिखाता है। पूर्णतया तिरती प्रणाली में, केंद्रीय बैंक विदेशी विनिमय बाजार में हस्तक्षेप नहीं करती।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

The Exchange Rate e*

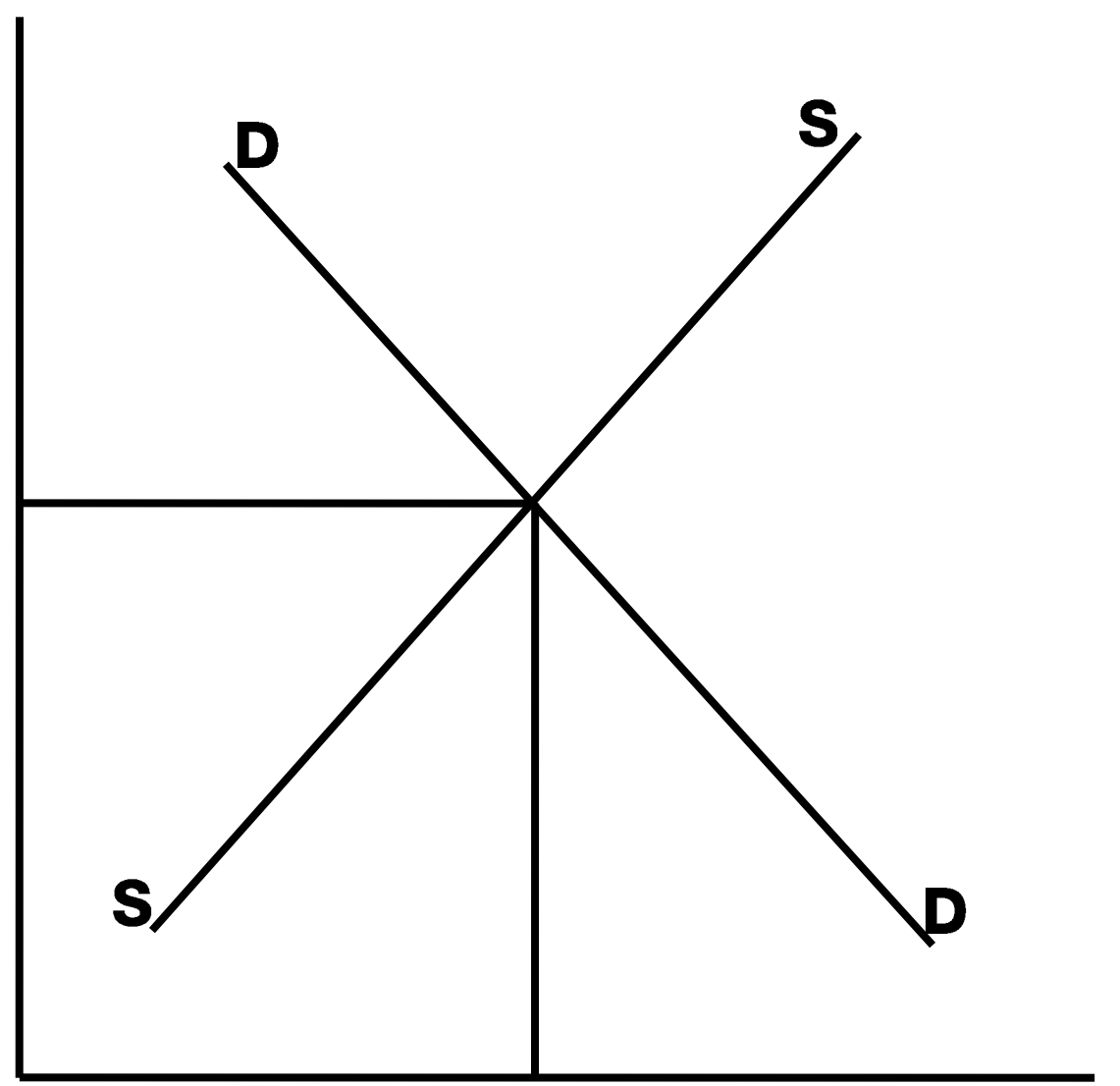

Suppose the demand for foreign goods and services increases (for example, due to increased international travelling by Indians), then as depicted in Fig. 6.2, the demand curve shifts upward and right to the original demand curve. The increase in demand for foreign goods and services result in a change in the exchange rate.

मान लीजिये कि विदेशी वस्तुओं और सेवाओं की माँग बढ़ जाती है (उदाहरणार्थ, भारतीयों द्वारा विदेशों में अधिक यात्रा करने के कारण) तो जैसा चित्र 6.2 में दिखाया गया है, माँग वक्र मूल माँग वक्र के सीधी ओर ऊपर की तरफ शिफ्ट कर जाता है। विदेशी वस्तुओं और सेवाओं की माँग में वृद्धि विनिमय की दर में बदलाव लाती हैं।

Increase in exchange rate implies that the price of foreign currency (dollar) in terms of domestic currency (rupees) has increased. This is called Depreciation of domestic currency (rupees) in terms of foreign currency (dollars). Similarly, in a flexible exchange rate regime, when the price of domestic currency (rupees) in terms of foreign currency (dollars) increases, it is called Appreciation of the domestic currency (rupees) in terms of foreign currency (dollars).

विनिमय दर में वृद्धि का तात्पर्य है कि विदेशी मुद्रा डॉलर की कीमत, घरेलू मुद्रा (रुपयों) के रूप में बढ़ गई है। इसे घरेलू मुद्रा (रुपयों) का विदेशी मुद्रा (डालरों) के रूप में ह्रास कहते हैं। इसी भांति, तिरती विनिमय दर व्यवस्था के अंर्तगत, जब घरेलू मुद्रा (रुपयों) की कीमत, विदेशी मुद्रा (डॉलरों) के रूप में बढ़ जाती है तो इसे घरेलू मुद्रा (रुपयों) की, विदेशी मुद्रा (डॉलरों) के रुप में 'मूल्य वृद्धि' कहते हैं।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

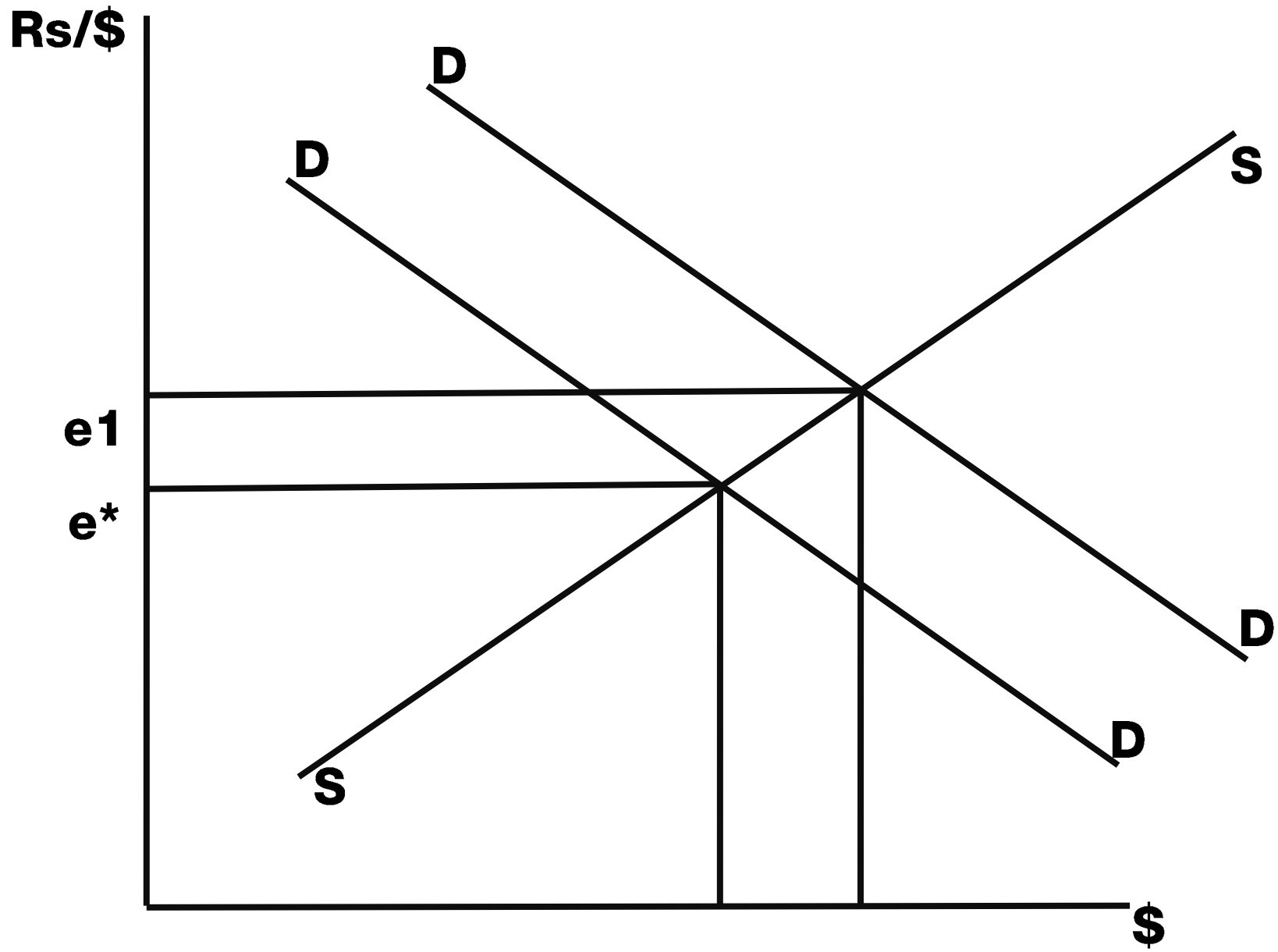

Speculation

Money in any country is an asset. If Indians believe that British pound is going to increase in value relative to the rupee, they will want to hold pounds. Thus exchange rates also get affected when people hold foreign exchange on the expectation that they can make gains from the appreciation of the currency.

सट्टेबाज़ी:

किसी भी देश की मुद्रा एक प्रकार की परिसंपत्ति है। यदि भारतीयों को यह विश्वास हो कि ब्रिटिश पौंड के मूल्य में रुपये की अपेक्षा वृद्धि होने की संभावना है, तो वे पौंड को अपने पास रखना चाहेंगे। उपर्युक्त विश्लेषण में यह मान लिया जाता है कि ब्याज की दर, आय और कीमत स्थिर रहती है। किंतु इनमें परिवर्तन हो सकता है और इससे विदेशी विनिमय के माँग और पूर्ति वक्र शिफ्ट होंगे।

Interest Rates and the Exchange Rate

In the short run, another factor that is important in determining exchange rate movements is the interest rate differential i.e. the difference between interest rates between countries. There are huge funds owned by banks, multinational corporations and wealthy individuals which move around the world in search of the highest interest rates.

ब्याज की दरें और विनिमय दर:

अल्पकाल में विनिमय दर के निर्धारण में एक दूसरा कारक भी महत्त्वपूर्ण होता है, जिसे ब्याज दर विभेदक कहते हैं। अर्थात देशों के बीच ब्याज की दरों में अंतर है। बैंक, बहुराष्ट्रीय निगम और धनी व्यक्ति, विशाल निधि के स्वामी होते हैं जिसका अधिक आय प्राप्त करने के लिए ऊँची ब्याज दर की खोज में पूरे विश्व में संचलन होता है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Income and the Exchange Rate

When income increases, consumer spending increases. Spending on imported goods is also likely to increase. When imports increase, the demand curve for foreign exchange shifts to the right. There is a depreciation of the domestic currency. If there is an increase in income abroad as well, domestic exports will rise and the supply curve of foreign exchange shifts outward. On balance, the domestic currency may or may not depreciate.

आय और विनिमय दर:

जब आय में वृद्धि होती है, तो उपभोक्ता के व्यय में भी वृद्धि होती है तथा आयातित वस्तुओं पर व्यय में भी वृद्धि की संभावना होती है। जब आयात बढ़ता है तो विदेशी विनिमय की माँग वक्र दायीं ओर शिफ्ट होती है। इससे घरेलू मुद्रा के मूल्य में ह्रास होता है। यदि विदेशी आय में भी वृद्धि होती है, तो घरेलू निर्यात में वृद्धि होगी जिससे विदेशी विनिमय का पूर्ति वक्र बाहर की ओर शिफ्ट होगा। संतुलन की स्थिति में घरेलू मुद्रा का मूल्य ह्रास हो भी सकता है और नहीं भी।

Exchange Rates in the Long Run

The purchasing Power (PPP) theory is used to make long-run predictions about exchange rates in a flexible exchange rate system. According to the theory, as long as there are no barriers to trade like tariffs (taxes on trade) and quotas (quantitative limits on imports), exchange rates should eventually adjust so that the same product costs the same whether measured in rupees in India, or dollars in the US, yen in Japan and so on, except for differences in transportation.

दीर्घकाल में विनिमय दर:

दीर्घकाल में नम्य विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर के संबंध में पूर्वानुमान करने के लिए क्रय–शक्ति समता सिद्धांत का उपयोग किया जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार जब कोई व्यापारिक अवरोधक जैसे– टैरिफ (व्यापारिक कर) और कोटा (आयात की मात्रा की सीमा) नहीं होंगे, तो विनिमय दर स्वत: समायोजित हो जाएगी। इससे एक प्रकार के उत्पाद की लागत, चाहे भारत में रुपयों में या संयुक्त राज्य अमेरिका में डॉलर में अथवा जापान में यन में क्यों न हो, समान ही होगी। सिर्फ परिवहन व्यय में अंतर होगा।

Fixed Exchange Rates

In this exchange rate system, the Government fixes the exchange rate at a particular level. In Fig. 6.3, the market determined exchange rate is e. However, let us suppose that for some reason the Indian Government wants to encourage exports for which it needs to make rupee cheaper for foreigners it would do so by fixing a higher exchange rate, say Rs 70 per dollar from the current exchange rate of Rs 50 per dollar.

स्थिर विनिमय दरें

इस विनिमय दर प्रणाली में, सरकार विनिमय दर का एक स्तर विशेष दर पर निर्धारित कर देती है। चित्र 6.3 में बाजार द्वारा निर्धारित विनिमय दर 'e' है। फिर भी मान लीजिये कि भारत सरकार किसी कारणवश निर्यातों को बढ़ाना चाहती है, इसके लिये इसे विदेशियों के लिये रुपये को सस्ता करना होगा। वह एसा विनिमय दर रुपये 50 प्रति डॉलर की वर्तमान दर से ऊंची विनिमय दर (जैसे रुपये 70 प्रति डॉलर) तय करके कर सकती है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

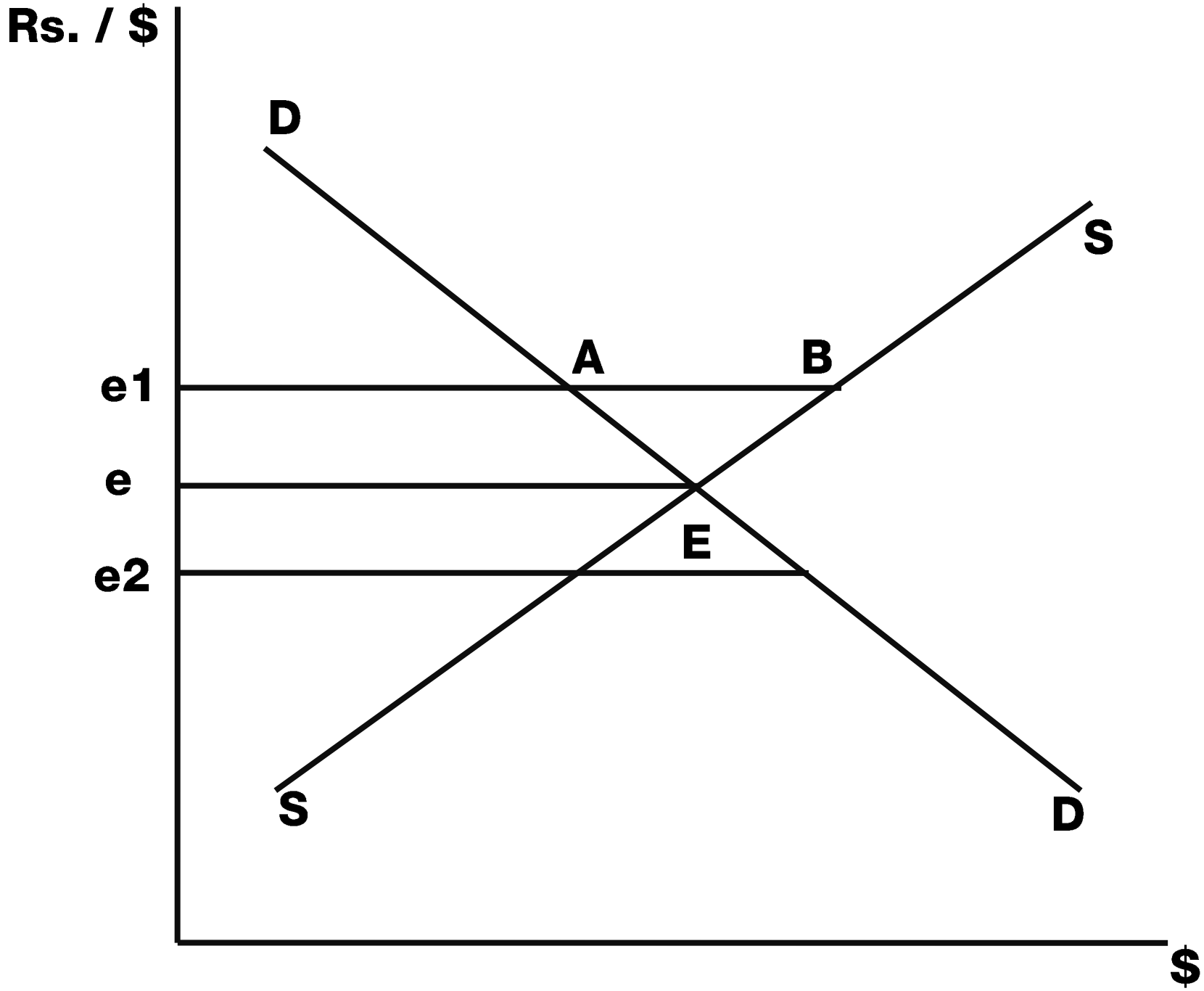

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

In a fixed exchange rate system, when some government action increases the exchange rate (thereby, making domestic currency cheaper) is called Devaluation. On the other hand, a Revaluation is said to occur, when the Government decreases the exchange rate (thereby, making domestic currency costlier) in a fixed exchange rate system.

स्थिर विनिमय दर प्रणाली के अंर्तगत, जब किसी सरकारी कार्यवाही द्वारा विनिमय दर बढ़ती है (इस प्रकार घरेलू मुद्रा को सस्ता करो) तो इसे 'अवमूल्यन' कहते हैं। दूसरी तरफ, मुद्रा का 'पुर्नमूल्यन' होता है, जब स्थिर विनिमय दर प्रणाली के अर्न्तगत, सरकार विनिमय दर का घटा देती है।

Merits and Demerits of Flexible and Fixed Exchange Rate Systems

The main feature of the fixed exchange rate system is that there must be credibility that the government will be able to maintain the exchange rate at the level specified. Often, if there is a deficit in the BOP, in a fixed exchange rate system, governments will have to intervene to take care of the gap by use of its official reserves. If people know that the amount of reserves is inadequate, they would begin to doubt the ability of the government to maintain the fixed rate.

तिरती और स्थिर विनिमय दर प्रणालियों के गुण और दोष

स्थिर विनिमय दर प्रणाली का मुख्य लक्षण यह विश्वसनीयता है कि सरकार एक निश्चित स्तर पर विनिमय की दर को बनाये रखने में सक्षम होगी। स्थिर विनिमय दर प्रणाली के अंर्तगत बहुध **BOP** में अधिक्य अथवा घाटा होता है। सरकारी आरक्षित कोषों का उपयोग कर, सरकारें इस लोप को पूरा करने के लिये हस्तक्षेप करती हैं। यदि लोगों को यह पता चल जाये कि सरकार के पास आरक्षित कोष कम हैं तो वे सरकार की स्थिर दरों को बनाये रखने की क्षमता पर संदेह करने लगते हैं।

This may give rise to speculation of devaluation. When this belief translates into aggressive buying of one currency thereby forcing the government to devalue, it is said to constitute a speculative attack on a currency. Fixed exchange rates are prone to these kinds of attacks, as has been witnessed in the period before the collapse of the Bretton Woods System.

इससे अवमूल्यन का अनुमान बढ़गा। जब यह विश्वास किसी मुद्रा को आक्रामक खरीद में बदल जाता है और सरकार को मुद्रा के अवमूल्यन के लिये बाध्य कर देता है, तो इस मुद्रा पर अनुमानित आक्रमण कहते हैं। स्थिर विनिमय दरें, इस प्रकार के आक्रमणों के उन्मुक्त होती हैं जैसा कि ब्रेटन वुड्स प्रणाली के पतन से पूर्व में देखा गया।

The flexible exchange rate system gives the government more flexibility and they do not need to maintain large stocks of foreign exchange reserves. The major advantage of flexible exchange rates is that movements in the exchange rate automatically take care of the surpluses and deficits in the BOP.

स्थिर विनिमय दर प्रणाली, सरकार को अधिक नम्यता प्रदान करती है और उन्हें विदेशी मुद्रा के विशाल कोषों का स्टॉक नहीं रखना पड़ता। तिरती विनिमय दर प्रणाली का एक बड़ा लाभ यह है कि विनिमय दरों में परिवर्तन, **BOP** के अधिक्य और घाटे की स्वत: देखभाल कर लेते हैं।

Managed Floating

Without any formal international agreement, the world has moved on to what can be best described as a managed floating exchange rate system. It is a mixture of a flexible exchange rate system (the float part) and a fixed rate system (the managed part). Under this system, also called dirty floating, central banks intervene to buy and sell foreign currencies in an attempt to moderate exchange rate movements whenever they feel that such actions are appropriate.

प्रबंधित तिरती

किसी औपचारिक अंतर्राष्ट्रीय समझौते के बिना विश्व में उत्तम विनिमय प्रणाली का उदय हुआ, जिसे उत्तम रूप में प्रबंधित तिरती विनिमय दर प्रणाली कहा जा सकता है। यह नम्य विनिमय दर प्रणाली (तरितभाग) और स्थिर दर प्रणाली (प्रबंधित भाग) का मिश्रण है। त्रुटिबहुल तिरती नाम की इस प्रणाली में केंद्रीय बैंक विनिमय दर को उदार बनाने के लिए जब कभी एसे कार्य को समुचित समझता है, तब विदेशी मुद्रा का क्रय-विक्रय करके हस्तक्षेप करता है।

Exchange Rate Management: The International Experience

The Gold Standard:

From around 1870 to the outbreak of the First World War in 1914, the prevailing system was the gold standard which was the epitome of the fixed exchange rate system. All currencies were defined in terms of gold; indeed some were actually made of gold. Each participant country committed to guarantee the free convertibility of its currency into gold at a fixed price.

विनिमय दर प्रबंध: अंतर्राष्ट्रीय अनुभव

स्वर्णमान: लगभग 1870 से 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ होने तक स्वर्णमान ही प्रचलित था, जो कि स्थिर विनिमय दर प्रणाली का सार-तत्व ही था। सभी करेंसियां सोने के रूप में परिभाषित की जाती थी। वास्तव में, कुछ तो सोने की ही बनी थी। प्रत्येक सहभागी देश एक निश्चित कीमत पर अपनी मुद्रा को मुक्त रूप से परिवर्तनीयता की गारंटी देने के लिए प्रतिबद्ध था।

This meant that residents had, at their disposal, a domestic currency which was freely convertible at a fixed price into another asset (gold) acceptable in international payments. This also made it possible for each currency to be convertible into all others at a fixed price.

इसका अर्थ यह था कि प्रत्येक देश के निवासी अपने देश की घरेलू मुद्रा का दूसरी परिसंपत्ति (सोना) के रूप में एक निश्चित कीमत पर मुक्त रूप से परिवर्तन कर सकते थे और सोना अंतर्राष्ट्रीय अदायगी के रूप में स्वीकार्य था। इससे यह भी संभव हुआ कि एक निश्चित कीमत पर प्रत्येक देश की मुद्रा दूसरी किसी भी मुद्रा के रूप में परिवर्तन योग्य बन गई।

Price levels were falling all over the world in the late nineteenth century, giving rise to social unrest. For a period, silver supplemented gold introducing 'bimetallism'. Also, fractional reserve banking helped to Economise on gold. Paper currency was not entirely backed by gold; typically countries held one-fourth gold against its paper currency.

कीमत को स्थिर बनाए रखने के लिए हर वर्ष सोने की पूर्ति में 4 प्रतिशत की वृद्धि आवश्यक होगी। खादानों से इतनी मात्रा में सोने का उत्पादन नहीं होने से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पूरे विश्व में कीमत स्तर में गिरावट आयी, जिससे समाज में असंतोष की भावना बढ़ गई। एक समय सोने के अनुरूपक के रूप में चाँदी का प्रयोग शुरू हुआ। इसे 'द्विधातुमान' कहा गया। सोने के व्यय को कम करने के लिए खंड सुरक्षित बैंकिंग से भी मदद मिली। कागज़ी मुद्रा को सोने का पूर्णतः समर्थन नहीं था।

Another way of economising on gold was the gold exchange standard which was adopted by many countries which kept their money exchangeable at fixed prices with respect to gold but held little or no gold. Instead of gold, they held the currency of some large country (The United States or the United Kingdom) which was on the gold standard.

कुछ विशिष्ट देशों में ही एक चौथाई सोना कागज़ी मुद्रा के बदले रखा जाता था। सोने की खपत को कम करने की दूसरी पद्धति स्वर्ण विनिमय मान को कई देशों में स्वीकार किया गया। इस पद्धति में सोने के सापेक्ष स्थिर कीमत पर मुद्रा का विनिमय किया जाता है, लेकिन उसके लिए सोने की थोड़ी मात्रा अथवा कुछ भी मात्रा नहीं रखी जाती। सोने के बदले वे किसी बड़े देश (संयुक्त राज्य अथवा ब्रिटेन) की मुद्रा रखते थे, जो स्वर्णमान पर आधारित था।

The Bretton Woods System:

The Bretton Woods Conference held in 1944 set up the International Monetary Fund (IMF) and the World Bank and reestablished a system of fixed exchange rates. This was different from the international gold standard in the choice of the asset in which national currencies would be convertible. A two-tier system of convertibility was established at the centre of which was the dollar.

ब्रेटन वुड्स प्रणाली:

1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.) और विश्व बैंक की स्थापना हुई तथा स्थिर विनिमय दर प्रणाली की भी पुनर्स्थापना की गई। परिसंपत्तियों के चयन के रूप में यह अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णमान से भिन्न था, जिसमें राष्ट्रीय करेंसी को परिवर्तनीय बनाया गया। करेंसियों की परिवर्तनीयता की द्विस्तरीय प्रणाली की स्थापना की गई, जिसके केंद्र में डॉलर को रखा गया।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

The Current Scenario :

Many countries currently have fixed exchange rates. The creation of the European Monetary Union in January, 1999, involved permanently fixing the exchange rates between the currencies of the members of the Union and the introduction of a new common currency, the Euro, under the management of the European Central Bank. From January, 2002, actual notes and coins were introduced. So far, 12 of the 25 members of the European Union have adopted the euro.

वर्तमान परिदृश्य:

वर्तमान में अनेक देशों में स्थिर विनिमय दर हैं। कुछ देश अपनी करेंसियों को डॉलर में अधिकीलित करते हैं। जनवरी, 1999 में य्रोपीय मौद्रिक संघ के सृजन से संघ के सदस्यों की करेंसियों के बीच विनिमय दर स्थायी रूप से निर्धारित हुई और एक नई समान मुद्रा य्रो को जारी किया गया। इसे य्रोपीय केंद्रीय बैंक के प्रबंध में जारी किया गया। जनवरी, 2002 से वास्तविक नोट और सिक्के चलाये गये। अब तक 25 में 12 य्रोपीय संघ के सदस्यों ने य्रो को अपनाया है।

Exchange Rate Management: The Indian Experience

India's exchange rate policy has evolved in line with international and domestic developments. Post-independence, in view of the prevailing Bretton Woods system, the Indian rupee was pegged to the pound sterling due to its historic links with Britain. A major development was the devaluation of the rupee by 36.5 per cent in June, 1966. With the breakdown of the Bretton Woods system , and also the declining share of UK in India's trade, the rupee was delinked from the pound sterling in September 1975.

विनिमय दर प्रबंध: भारतीय अनुभव

भारत की विनिमय दर नीति अंतर्राष्ट्रीय और देशीय विकास के साथ विकसित हुई है। स्वतंत्रता के बाद ब्रेटन वुड्स व्यवस्था की दृष्टि से भारतीय रुपया ब्रिटेन के साथ एतिहासिक संबंध के कारण पौंड स्टर्लिंग में अधिकीलित हुआ। जून, 1966 में रुपये का 36.5 प्रतिशत अवमूल्यन एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। ब्रेटन वुड्स व्यवस्था के विखंडन और भारत के व्यापार में यूनाइटेड किंगडम के अंश के घटने से सिंतबर, 1975 में पौंड स्टर्लिंग से रुपये का संबंध-विच्छेद कर दिया गया। ?

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

During the period between 1975 to 1992, the exchange rate of the rupee was officially determined by the Reserve Bank within a nominal band of plus or minus 5 per cent of the weighted basket of currencies of India's major trading partners. The Reserve Bank intervened on a day-to-day basis which resulted in wide changes in the size of reserves. The exchange rate regime of this period can be described as an adjustable nominal peg with a band.

1975 से लेकर 1992 तक की अवधि के दौरान रुपये की विनिमय दर भारतीय रिज़र्व बैंक के द्वारा निर्धारित होती थी, जो भारत के प्रधान व्यापारिक हिस्सेदार की मुद्रा के भारित बंडल के +/– 5% नाममात्र के व्यापारिक सहभागियों के अंतर्गत होता था। रिज़र्व बैंक दैनिक आधार पर हस्तक्षेप करता था। जिससे आरक्षित निधि के आकार में व्यापक परिवर्तन होता था। इस अवधि की विनिमय दर व्यवस्था का वर्णन एक पट्टी के साथ नाममात्र अधिकीलित के समायोजन के रूप में किया जा सकता है।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

The beginning of 1990s saw significant rise in oil prices and suspension of remittances from the Gulf region in the wake of the Gulf crisis. This, and other domestic and international developments, led to severe balance of payments problems in India.

1990 के आरंभ में तेल की कीमत में अत्यधिक वृद्धि हुई और खाड़ी संकट के कारण खाड़ी के क्षेत्र से धन का आना रुक गया। इससे और अन्य देशी और अंतर्राष्ट्रीय विकास से भारत में अदायगी–संतुलन की समस्या गंभीर हो गई।

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Open economy - खुली अर्थव्यवस्था

Current account deficit - चालू खातागत घाटा

Autonomous and accommodating transactions - मौद्रिक और वास्तविक विनिमय दर

Purchasing power parity – क्रय–शक्ति समता

Depreciation – मूल्यह्रास

Fixed exchange rate – स्थिर विनिमय दर

Managed floating –प्रबंधित तिरती

Marginal propensity to import Open economy multiplier - आयात की सीमांत प्रवृति खुली अर्थव्यवस्था गुणक

Open Economy Macroeconomics खुली अर्थव्यवस्था समष्टि अर्थशास्त्र

Balance of payments - अदायगी–संतुलन

Official reserve transactions - आधिकारिक आरक्षित

Nominal and real exchange rate - नम्य विनिमय दर

Flexible exchange rate - लचीली विनिमय दर

Interest rate differential - ब्याज दर विभेदक

Devaluation - अवमूल्यन

Demand for domestic goods - घरेलू वस्तु की माँग

Net exports - निवल निर्यात